# "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।"

**शैलेन्द्र कुमार सिंह**
शोधार्थी
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश

ब्रह्माण्डीय विकास एवं सृजन का सबसे विलक्षण प्राणी मानव है। अपने प्रादुर्भाव के शीघ्र उपरान्त मानव ने अपने उन्नत स्नायुमण्डल तथा मानसिक क्षमता के बल पर ध्वनियों तथा संकेतों की सहायता से परस्पर संवाद को सहज बना लिया एवं अपने प्रश्नों, जिज्ञासाओं, कठिनाइयों, विचारों व प्रेक्षणों को अभिव्यक्त करने एवं अंकित करने में सफलता प्राप्त कर ली थी। कालान्तर में ज्ञान एवं विवेक मानव जाति के सर्वाधिक शक्तिशाली साधन बन गये। मानव जाति ने अपने ज्ञान, बुद्धि व विवेक के बल पर अपनी सभ्यताओं व संस्कृतियों की रचना को करने में सफलता अर्जित की है, एवं इसे आगे बढ़ाया है। मानव विकास का इतिहास वस्तुतः ज्ञान एवं विवेक के सम्यक उपयोग से जिज्ञासाओं, विभ्रमों तथा समस्याओं का निराकरण करने के प्रयासों का वर्णन कहा जा सकता है। मानव व्यवहार के तीन प्रमुख पक्षों यथा–ज्ञान, भाव व क्रिया–में भी ज्ञान की भूमिका व स्थान को सर्वप्रथम व सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। आधुनिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास की पीछे भी ज्ञान की पिपासा एवं अनुत्तरित प्रश्नों व समस्याओं का समाधान खोजने की जिज्ञासा रही है। अनुसंधान ऐसे ही प्रयासों का सुव्यवस्थित, नियंत्रित तथा औपचारिक स्वरूप होता है। आधुनिक अनुसंधान प्रक्रिया को भली–भाँति समझने के लिए मानव के द्वारा समय–समय पर तार्किक चिन्तन एवं ज्ञानार्जन करने सम्बंधी विधियों पर दृष्टिपात करना उचित व आवश्यक प्रतीत होता है।

अपने जीवन को सुखमय तथा निरापद बनाने के लिए सभी प्राणियों में अपने वातावरण को जानने व समझने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति व जिज्ञासा होती है, परन्तु जहाँ पशु–पंक्षियों में अपने चारों तरफ के परिवेश व घटनाओं को समझने–बूझने की क्षमता होती है, वहीं मानव ने अपनी बुद्धि व चतुराई से अपने वातावरण तथा उसमें होने वाली विभिन्न घटनाओं को

व्यापक रूप से समझने का प्रयास किया है एवं वह इस दिशा में निरन्तर क्रियाशील रहता है। वस्तुतः समय के स्वाभाविक प्रवाह के साथ मानव जाति के ज्ञान–भण्डार में निरन्तर वृद्धि तथा विकास होता रहता है। ज्ञान वास्तव में छतरीनुमा व्यापक शब्द है, जिसमें अनेक शब्द समाये रहते हैं। तथ्य, स्वयं–सिद्धि, अन्तर्सम्बन्ध, सिद्धान्त, नियम, अभिधारणा, विश्वास, प्रक्रिया, व्याख्या, अनुप्रयोग तथा भविष्यवाणी जैसे शब्द किसी न किसी रूप में ज्ञान को इंगित करते हैं।

**शैक्षिक उपलब्धि :–** आज व्यक्ति के जीवन में व्यैक्तिक भिन्नता का ज्ञान, हमने किसी कार्य को कितना सीखा इसका ज्ञान, उपलब्धि के द्वारा होता है। मनोविज्ञान के परीक्षणों की श्रृंखला के प्रयोग में आने वाला उपलब्धि परीक्षण का, शैक्षिक जीवन में अत्यंत महत्व है। विद्यार्थी के चयन, उन्नति, तुलनात्मक अध्ययन आदि में इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

**गे–के अनुसार :–** ''उपलब्धि परीक्षण द्वारा ज्ञान या कौशल के किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति की अर्जित निपुणता की वर्तमान स्थिति की माप होती है।''

**फ्रीमेन के अनुसार :–** ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण ऐसा परीक्षण है, जिसके द्वारा कोई विशिष्ट विषय या विषयों के समूह में अर्जित किए गए ज्ञान, बोध या कौशल की माप होती है।''

**सृजनात्मकता –** एक विशेष ढंग से चिंतन करने का तरीका सृजनात्मक या रचनात्मक चिंतन कहा जाता है। सर्जनात्मकता का सामान्य अर्थ प्रायः मौलिकता से लगाया जाता है। ईश्वर के द्वारा उचित सृष्टि के प्रत्येक कण में उसकी सृजनशील का पता चलता है। ईश्वर की सृजनशक्ति का स्वरूप प्रत्येक मानव में उसी तरह से झलकता है, जिस प्रकार सूर्य की प्रत्येक किरण में उसका प्रकाश विद्यमान रहता है। इसलिए सृजनात्मकता या सृजनशीलता का अर्थ सरल शब्दों में नयी–नयी ऐसी अनोखी चीजों का निर्माण करना है, जिसमें मौलिकता, न्यायकता, बारम्बारता, लचीलापन और रहस्यमयता हो।

**हैमोविज तथा हैमोविज के अनुसार** –''नव परिवर्तन लाने आविष्कार करने तथा तत्वों को इस ढंग से रखने की क्षमता जैसे वे कभी रखें नहीं गए हों ताकि उनका महत्व या सुन्दरता बढ़ जाए, को ही सर्जनात्मकता की संज्ञा दी जाती है।''

**टेलर** – ''वह क्रिया सृजनात्मक है, जिसका परिणाम एक ऐसे नवीन कार्य के रुप में हो, जो समय विशेष पर एक समूह को संतोषप्रिय, उपयोगी और रक्षणीय के रुप में ग्राह्य हो।''

**शोध अध्ययन का उद्देश्य :–**

(1) शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने का उद्देश्य।

(2) शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता ज्ञात करने का उद्देश्य।

**शोध परिकल्पना :–**

(1) शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि :–** वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत शोध सर्वेक्षण विधि के द्वारा अध्ययन किया गया है।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर :–**

1. शासकीय विद्यालय
2. छात्र
3. छात्राएँ
4. शैक्षिक उपलब्धि
5. सृजनात्मकता

**शोध अध्ययन के लिए न्यादर्श :–** न्यादर्श का आकार 400 होगा।

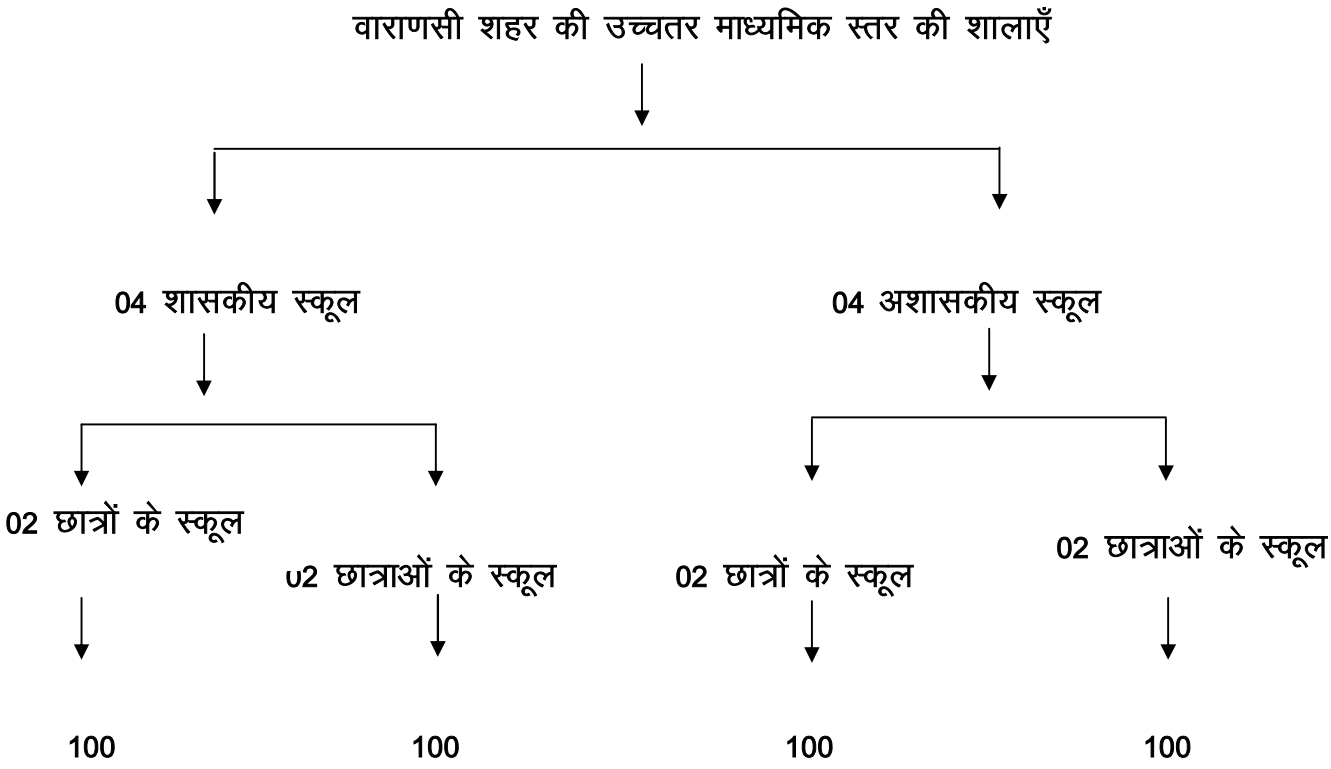


न्यादर्श का आकार 400 विद्यार्थी, जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राएँ हैं।

**शोध उपकरण :–** शैक्षिक उपलब्धि – उच्चतर माध्यमिक स्तर का परीक्षा परिणाम

सृजनात्मकता :– डॉ0 रोमापाल का प्रमाणीकृत परीक्षण

**अध्ययन न्यादर्श परिसीमन :–** शासकीय विद्यालय के उच्चतर माध्यमिक स्तर के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन किया गया है।

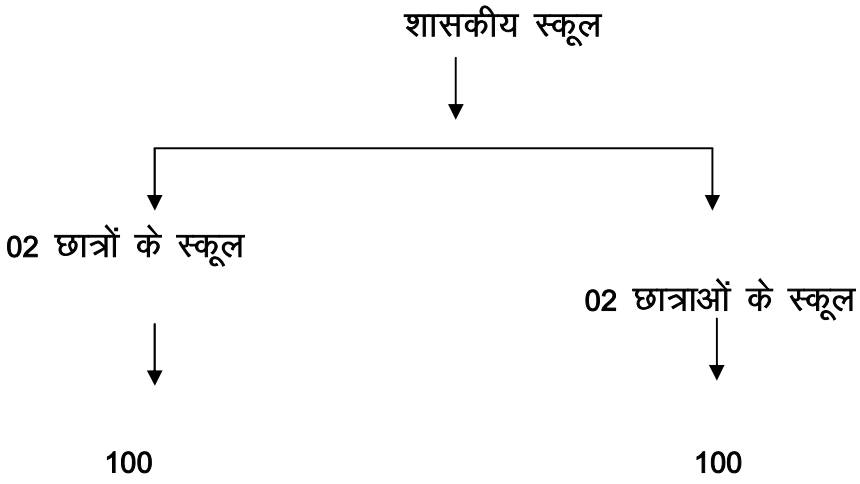


शोध में जानने का प्रयास किया जायेगा कि वाराणसी शहर के शासकीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता में क्या कोई आपसी सम्बंध है। यदि है, तो कितना है यह सारणी विश्लेषण के द्वारा स्पष्ट किया जायेगा।

**विश्लेषण एवं सांख्यिकी :–** मध्यमान (M) मानक विचलन (SD) मानक विचलन त्रुटि (SED), तथा t परीक्षण के द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है।

**परिकल्पना–1 :–** शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

## सारणी क्रमांक – 1

शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के t मान का विश्लेषण ।

| S.N. | Group | N | M | SD | D | SED | t | Significant Level |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शासकीय विद्यालय के छात्र | 100 | 48.00 | 7.28 | 7.26 | .899 | 8.068 | .05<br>1.98<br>सार्थक |
| 2 | शासकीय विद्यालय की छात्राएँ | 0 | 55.26 | 5.29 | | | | |

dF = 198, 0.05 पर सार्थकता स्तर का मान 1.98

**सारणी क्रमांक** – 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि शा0 वि0 के छात्रों का मध्यमान 48.00 तथा छात्राओं का मध्यमान 55.26 प्राप्त हुआ है। dF198 तथा .05 सार्थकता स्तर पर t का मान 8.068 प्राप्त हुआ है।जो .05 सार्थकता स्तर को सार्थकता 1.98 से अधिक प्राप्त हुआ है।अतः .05 सार्थकता स्तर पर दोनों समूहों में मध्यमान में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय छात्राएँ शासकीय छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षिक उपलब्धि रखती हैं। अतः शुन्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है।

**परिकल्पना क्रमांक – 2** :– शासकीय छात्रों तथा छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

## सारणी क्रमांक – 2

शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता के t मान का विश्लेषण।

| S.N. | Group | N | M | SD | D | SED | t | Significant Level |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शासकीय विद्यालय के छात्र | 0 | 42.21 | 5.90 | 12.05 | .795 | 15.157 | .05 1.98 सार्थक |
| 2 | शासकीय विद्यालय की छात्राएँ | 0 | 54.26 | 5.33 | | | | |

dF = 198, 0.05 पर सार्थकता स्तर का मान 1.98

**सारणी क्रमांक** – 2 को देखने से स्पष्ट है कि dF = 198 तथा .05 सार्थकता की table value (1.98) पर शासकीय छात्रों का मध्यमान 42.21 तथा शासकीय छात्राओं का मध्यमान 54.26 प्राप्त हुआ है। t का मान .05 पर 15.157 प्राप्त हुआ है। जो सार्थकता स्तर .05 पर 1.98 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः मध्यमान में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय छात्राएँ शासकीय छात्रों की तुलना में अधिक सृजनशील पाई गई है। अतः शुन्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

**निष्कर्ष–** शोध सारणी क्रमांक 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की तुलना में बेहतर पायी गयी। सारणी क्रमांक–2 को देखने से स्पष्ट होता है कि छात्राओं की सृजनात्मकता छात्रों की तुलना में बेहतर पायी गयी।

अतः शोध से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय की छात्राओं का प्रदर्शन शासकीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में बेहतर है।